Volume : 2 | Issue : 9 | Sept 2013 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Geography

वर्षा जल का संचयन
Varsha Jal Ka Sanchayan

Abhishek Saraswat — Research Scholar, Geology, Maharani Laxmibai Shash. University, Gwaliar, M.P.

Dr. Shailendra Sinh Tomar — Professor and department Head of Geology, Maharani Laxmibai Shash. University, Gwaliar, M.P.

ABSTRACT

भू–जल जहॉ पर्यावरण अति महत्वपूर्ण अंग है वहीं दूसरी ओर जल के बिना जीवन की कल्पना करना निरर्थक है। जल केवल जीव–जन्तु व प्राणी मात्र के लिये ही नहीं अपितु वनस्पतियों के लिये भी आवश्यक है। जल का उचित सदुपयोग होना जरूरी है। पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल में स्वच्छ जल का हिस्सा केवल 3 प्रतिशत है शेष समुद्र में उपलब्ध नमकीन जल है। हमारी पृथ्वी पर उपलब्ध कुल स्वच्छ जल में से 11 प्रतिशत हिस्सा भू–जल के रूप में हमें प्राप्त होता है जो पृथ्वी के भीतर 800 मीटर की गहराई तक उपलब्ध है। लेकिन आज की स्थिति में मनुष्य उसका अतिदोहन करता जा रहा है। जिसके कारण इसकी मात्रा एवं गुणवत्ता में कमी आने लगी है। इस कमी को दूर करने के लिये एवं भू–जल को पुनः संग्रहण करने के लिये एक मात्र उपाय वर्षा जल का संचयन करना है जो एक आसान तथा लाभप्रद उपाय है। अतः हमें अपनी सरकार के साथ मिलकर वर्षा जल के संचयन के उपायों को गम्भीरता के साथ पालन करके भू–जल के गिरते स्तर को स्थिर किया जा सकता है। और हमारी भावी पीढ़ी की जल की मॉग को पूरा किया जा सकता है।

KEYWORDS:

''रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून'' यह रहीम की एक काव्योक्ति मात्र नहीं है बल्कि जल के संकट और जल के संरक्षण के सम्बन्ध में लगभग सवा चार सौ वर्ष पूर्व दी गई एक चेतावनी थी। जल को लेकर आये दिन हो रहे विवादों के सन्दर्भ में इस चेतावनी की प्रासंगिकता दिन–प्रतिदिन बढ़ती दी जा रही है। हमारे उपनिशदों में भी उल्लेखित है कि भूमि को जल चाहिये और जल को वन। इससे यह स्पश्ट होता है कि हमारे पूर्वजों ने भी जल की महत्वता को अच्छी तरह पहचाना था।

हमारे देष में निरन्तर जनसॅख्या वृद्धि हो रही है। आज देष की जनसॅख्या एक अरब से ऊपर हो चुकी है। तथा देष के साढ़े पॉच लाख में से आज भी एक लाख गॉव पीने के पानी से त्रस्त हैं। एक चिन्तनीय विशय और है कि भारत की भू–सतह पर गिरने वाले 4000 घन किमी जल का आधे से दो–तिहाई हिस्सा व्यर्थ ही बह जाता है। हमारे देष में द्रुत गति से बढ़ती जनसॅख्या, औद्योगिकीकरण, षहरीकरण और मानव की विलासिता की प्रवृत्ति ने जल संकट को अधिक बढ़ा दिया है। 21वी सदी में मानव के समक्ष जल संकट एक गम्भीर समस्या के रूप में उभरकर आया है। और इस समस्या का सरल एवं कारगर उपाय है। वर्शा द्वारा प्राप्त जल का संचयन। भारत के राजस्थान राज्य में यद्यपि वर्शा बहुत कम होती है। फिर भी जितना पानी बरसता है उसे संचित करने के उपाय गॉव–गॉव किये जाते हैं।

आज वर्शा के जल को एकत्रित करना एवं उसके भण्डारण की तकनीक को व्यवस्थित बनाने की आवष्यकता है। भारत में वर्श के कुछ ही माहों में वर्शा होती है। अतः वर्शा के जल को दीर्घकाल तक उपयोग करने के लिये इसे एकत्रित करना आवष्यक है। इस कार्य में निम्नलिखित दो विधियॉ अपनाई जाती है।

ऊपरी छत का जल – ऊपरी छत से वर्शा जल संग्रहण तकनीक गिरते भू–जल को बढ़ाने का कारगर कदम है। इसमें वर्शा के दौरान व्यर्थ बह गये जल को रोककर उसका व्यापक प्रबंध किया जा सकता है। इमारतों की छत से वर्शा जल के संग्रहण की व्यवस्था कम खर्चीली एवं अधिक प्रभावषाली है। इससे भू–जल की गुणवत्ता में सुधार तथा भू–जल की पुनर्भरण क्षमता भी बढ़ती है। इस प्रकार की जल संचयन रचनाओं से बाढ़ में भी कमी आती है।

सतही अपवाह जल – इस विधि द्वारा वर्शा जल को भू–तल जलाषयों तथा सूक्ष्म जलाषयों में एकत्रित कर उसे खेतों में, घरों की सफाई, धुलाई, वनजीवों एवं घरेलू पषुओं द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त देष में षुश्क तथा अर्द्धश्षुश्क भागों में भूमि की नमी को बचाये रखना सबसे प्रमुख समस्या है। ऐसे क्षेत्रों में एकत्रित वर्शा जल से भूमि की नमी को बनाये रखने के साथ–साथ सूखाग्रस्त क्षेत्रों की कृशि में वर्शा जल का उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में वर्शा जल संचयन और पुनर्भरण का उद्देष्य जहॉ भूमिगत जल स्तर को सुधार कर पानी की उपलब्धता बढ़ाना है, वहीं इससे जल की गुणवत्ता में सुधार होता है और पर्यावरण पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। वर्शा जल संरक्षण का लाभ इस तथ्य से भली प्रकार समझा जा सकता है कि चेरापूॅजी में जहॉ विष्व में सर्वाधिक पानी बरसता है वहॉ लोगों को पेयजल लाने के लिये कई किमी चलना पड़ता है, जबकि राजस्थान में वर्शा बहुत कम होती है। लेकिन जल संरक्षण सुझावों के फलस्वरूप यहॉ पानी का संकट न के बराबर है।

जल संग्रह करने के लिये लम्बी चौड़ी योजनायें बनाने, तकनीकी सलाह लेने और काफी धन जुटाने की जरूरत नहीं है। इसके लिये ग्रामीणों को सरकार का मुॅह ताकने की आवष्यकता भी नहीं है। हमें अपने पूर्वजों की तरह छोटे–छोटे तालाबों एवं नदियों में छोटे–छोटे बॉध बनाकर इस कार्य को कर सकते हैं। इस दिषा में महाराश्ट्र के रालेगॉव सिद्धि और राजस्थान में अलवर के लोगों ने अपने साधनों और श्रम से जलसंग्रह की अनेक छोटी–छोटी योजनाओं को कायान्वित करके अपने क्षेत्र की कायापलट कर दी है। उन्होंने वर्शा के जल को बहने से बचाया और उसका संग्रह किया। जिस स्थान पर पहले घास भी नहीं होती थी वहॉ फसलें लहराने लगी और क्षेत्र का वातावरण हरा–भरा हो गया। इसके अलावा मध्यप्रदेष के मंदसौर जिले में भी पानी का भण्डारण किया गया। मंदसौर जिले के गॉववासियों की तरह सभी गॉववासी आपसी सहयोग और मेहनत से अपने क्षेत्र में जल संग्रह करके जल संकट को दूर कर सकते हैं।

वर्शा जल संग्रहण द्वारा हमारे देष के ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में न केवल जल संकट का समाधान हो सकता है अपितु जनता व स्वयंसेवी संगठनों की भागेदारी निष्चित करके सरकार पर हमारी निर्भरता भी कम हो सकती है। इस प्रकार हम अपनी भावी पीढ़ी की जल की मॉग को भी पूरा कर सकते हैं और देष में व्याप्त जल की समस्या से छुटकारा भी पा सकते हैं।

REFERENCES

1. नाटाणी पी.एन., 2008, जल संरक्षण–समस्या एवं समाधान, बुक एनक्लेव, जयपुर। द्य 2. ओझा डॉ. डी.डी., 2007, जल प्रबंधन, सुरभि प्रकाशन जयपुर। द्य 3. तोमर डॉ. शैलेन्द्र सिंह, 2013, जल संरक्षण एवं प्रबंधन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली। द्य 4. द्विवेदी ए.पी. एवं चतुर्वेदी जे.के.,1997, भू–प्रबंधन एवं संरक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़। द्य 5. पत्रिका–भूगोल और आप, (मार्च–अप्रैल 2010), आइरिस पब्लिकेशन, नई दिल्ली। द्य